ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(8): 937-940
www.allresearchjournal.com
Received: 23-06-2017
Accepted: 24-07-2017

डॉ0 अनुराधा गोयल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बरेली कॉलेज,
बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 अनुराधा गोयल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बरेली कॉलेज,
बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

महिलाऐं और समाज

डॉ0 अनुराधा गोयल

प्रस्ताबना:

नारी राष्ट्र के भाग्य की निर्माता है। फूल की तरह कोमल होने के बावजूद, उनका हृदय पुरूषों से कहीं अधिक मजबूत और साहसी है ... वह मनुष्य के आगे बढ़ने की सर्वोच्च प्रेरणा हैं। – रविन्द्रनाथ टैगोर।

महिलाऐं किसी भी देश की राष्ट्रीय आबादी का लगभग आधा हिस्सा होता है। इसलिए किसी भी देश का विकास महिलाओं के विकास की स्थिति से अविभाज्य रूप से जुड़ा होता है। इसलिए, विद्वानों, शिक्षाविदों, समाजवादियों, मीडिया और स्वैच्छिक एजेंसियों की जिम्मेदारी बन जाती है कि वे महिलाओं के विकास के लिए माहौल बनाने हेतु उत्प्रेरक के रूप में कार्य करें। अतीत में बड़ी संख्या में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक बाधाओं ने महिलाओं की प्रगति में बाधा डाली, लेकिन अब उनके दृष्टिकोण और परिवार में निर्णय निर्माताओं के रूप में उनकी भूमिका, जैसी समग्र स्थितियों में एक धीमा और स्थिर परिवर्तन पाते हैं। लड़कियों को बड़े पैमाने पर शिक्षित करके यह सुधार लाया गया है। लड़कियों को दी जाने वाली शिक्षा के कारण ही आज महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। अब महिलाऐं परिवर्तन और समय की मांगों से अवगत हैं। वे प्रगति और विकास की गति के साथ चल सकती हैं। वे शिक्षा और रोजगार के अवसरों का उपयोग करके समान स्थिति और सशक्तिकरण प्राप्त करने की इच्छा रखती हैं। आधुनिक महिला अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के कारण अपने परिवार की देखभाल कर सकती है, क्योंकि वह शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, पोषण और कानूनी सहायता प्राप्त कर सकती है।

सशक्तिकरण एक कौशल निर्माण है, और शिक्षा इस व्यक्तिगत कौशल और क्षमता को विकसित करने और प्रतिबिंबित करने की प्रक्रिया है। सशक्तिकरण व्यक्ति की योग्यता के आधार पर सामाजिक चयन की अनुमति देकर सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाता है। शिक्षा महिलाओं को सशक्त बनाने का एक माध्यम है। शिक्षा विशेष रूप से वैश्वीकृत दुनिया में सूचना और कामकाज के साधनों को प्रभावी ढंग से लैस करके उन्हें सशक्त बनाने में मदद करती है। यह जीवन में बेहतर अवसर के लिए उनकी क्षमता और दक्षता को बढ़ाता है और विशेष रूप से नौकरी और गैर पारंपरिक व्यवसायों में बेहतर रोजगार के अवसर और स्वरोजगार के अवसर प्रदान करता है। यूनिफेम (2005) के निष्कर्षों के अनुसार महिला सशक्तिकरण के मापन के लिए पांच आयामों को चुना गया है।

- शिक्षा प्राप्ति
- आर्थिक भागीदारी
- आर्थिक अवसर
- राजनीतिक सशक्तिकरण
- स्वास्थ्य और अच्छाई

हेमलता और प्रसाद (1997) ने महिलाओं के सशक्तिकरण के मापदंडों को व्यापक रूप से निम्नानुसार बताया है–

- आत्म–सम्मान और आत्म–विश्वास।
- गंभीर रूप से सोचने की क्षमता।
- तेजी से निर्णय लेना।
- शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य विशेष रूप से प्रजनन स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में सूचित विकल्प।
- विकास प्रक्रिया में समान भागीदारी।
- आर्थिक स्वतंत्रता के लिए सूचना, ज्ञान और कौशल।
- कानूनी साक्षरता और उनके अधिकारों से संबंधित जानकारी तक उनकी पहुंच।

चूंकि शिक्षा महिला सशक्तिकरण में योगदान करती है, आधुनिक महिला दक्षता में तकनीकी कौशल के उपयोग को कम करके नहीं आंका जा सकता है।

यह भारत जैसे विकासशील देश में लैंगिक सशक्तिकरण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभर रहा है। यह महिलाओं के लिए अपने अनुभवों, चिंताओं और ज्ञान को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने और साझा करने के लिए रास्ते खोलकर महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को उत्प्रेरित करता है, जिससे उनके और समृद्ध होने की संभावना पैदा होती है। टेक्नोलॉजी ने महिलाओं के जीवन को आसान और आरामदायक बना दिया है। अब उन्हें पढ़ाई, काम करने, परिवार के साथ आनंद लेने और ऐसी अन्य गतिविधियों में शामिल होने के लिए पर्याप्त समय मिलता है। प्रौद्योगिकी महिलाओं को उनकी गतिविधियों के दायरे को व्यापक बनाने और पहले से उनकी क्षमता से परे मुद्दों को संबोधित करने में मदद करती है। यहां दो महत्वपूर्ण पहलुओं का उल्लेख करने की आवश्यकता है, रथगेबर (2011) ने कहा है, कि मुख्य मुद्दा यह है कि महिलाओं को प्रौद्योगिकी के अनुकूल होने के बजाय महिलाओं के अनुरूप प्रौद्योगिकियों को अनुकूलित किया जाना चाहिए, और दूसरा, प्रशिक्षण का है यदि महिलाओं को अपनी पसंद की तकनीक का उपयोग करना है तो यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करने से महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने का अवसर मिलता है। प्रौद्योगिकी महिलाओं को कार्यालय के बाहर, अक्सर अपने घरों से और किसी भी समय काम करने में सक्षम बनाती है, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है और वे अधिक आर्थिक रूप से स्वतंत्र और सशक्त बनते हैं। (रथगेबर, 2011)

''नेटवर्किंग ग्रामीण महिला और ज्ञान'', नबन्ना, भारत में एक यूनेस्को परियोजना है जो गरीब महिलाओं के लाभ के लिए स्थानीय भाषा में डेटाबेस, इंट्रानेट पोर्टल और वेब आधारित नवीन उपयोगों का पता लगाने हेतु परियोजना ने निर्माण पर जोर दिया गया है, इसमें सूचना साझा करने, सामग्री निर्माण, ऑफलाइन सूचना प्रसार और क्षेत्र के बाहर स्थित संगठनों के साथ वेब आधारित साझेदारी के लिए ढांचा तैयार करने पर जोर दिया गया है। परियोजना का मुख्य उद्देश्य बदुरिया, रुद्रपुर, तरागुनिया, अर्बेलिया और पुंडा में पांच आईसीटी केंद्रों पर सरल सुविधाएं और प्रशिक्षण प्रदान करके महिलाओं के स्थानीय सूचना नेटवर्क का निर्माण करना था। नबन्ना नेटवर्क के माध्यम से महिलाओं ने स्थानीय स्वदेशी सूचनाओं के साथ–साथ सूचना समूह की बैठकों या समाचार पत्र में प्राप्त जानकारी को साझा किया। बदुरिया में महिलाओं ने आय–सृजन गतिविधियों, शिक्षा परियोजनाओं, सूक्ष्म वित्त और स्वास्थ्य के बारे में जानकारी का आदान–प्रदान किया है। इसलिए युवा और शिक्षित महिलाओं ने आईसीटी तक पहुंच और नियंत्रण प्राप्त किया है, वहीं कम शिक्षित और वृद्ध महिलाओं ने मानवीय नेटवर्क के माध्यम से सूचनाओं को प्राप्त करने में पहुँच बनाई है। बदुरिया में महिलाओं ने आईसीटी के माध्यम से अपनी एजेंसी को बढ़ाया है और अर्जित आईसीटी प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप स्थानीय महिलाओं ने कंप्यूटर का उपयोग करना सीखा और स्थानीय लोगों को अर्जित नई जानकारियों से अवगत कराया जिस कारंण महिलाओं को अधिक सम्मान मिलने लगा। इससे परिवार और समुदाय दोनों स्तरों पर महिलाओं का अधिक सम्मान हुआ। युवा महिलाओं ने महसूस किया कि वे पहले की तुलना में अधिक आत्मविश्वास के साथ नौकरी तक अपनी पहुँच बनाने में सक्षम हैं। आईसीटी कौशल उन्हें नौकरी खोजने और उनकी आय बढ़ाने में मदद करते हैं। इसके द्वारा महिलाओं ने आय में वृद्धि के साथ–साथ समुदाय में महिलाओं के बीच एकजुटता में वृद्धि हासिल की है।

भारत एक बहुआयामी समाज है जहां देश में विभिन्न क्षेत्रीय, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक समूहों पर कोई सामान्य नियम लागू नहीं हो सकता है। हाल के दशकों में दुनिया के कुछ हिस्सों में महिलाओं की स्थिति में हुए बड़े बदलावों के बावजूद, भारत में महिलाओं को घर तक सीमित रखने वाले मानदंड अभी भी शक्तिशाली हैं, जो महिलाओं के लिए उपयुक्त मानी जाने वाली गतिविधियों को परिभाषित करते हैं। अध्यापन का पेशा महिलाओं के लिए एक अच्छा पेशा माना जाता है क्योंकि हमारा समाज इस नौकरी के लिए पूरी मंजूरी देता है। दुनिया भर में शिक्षण पेशे के प्रति महिलाओं की प्रधानता पुरुषों की तुलना में बहुत अधिक है। यह पता लगाने के लिए अनुभवजन्य अध्ययन की आवश्यकता है कि क्या सामान्य रूप से महिलाओं और विशेष रूप से कामकाजी महिलाओं की जीवन संतुष्टि उनके आधुनिक दृष्टिकोण और प्रौद्योगिकी के उपयोग के कारण बढ़ी है।

जब लोग खुश होते हैं, तो वे अपनी सोच के प्रति अधिक खुले विचारों वाले और रचनात्मक होते हैं। इसके विपरीत, जो लोग दुखी, तनावग्रस्त या असंतुष्ट होते हैं, वे संकीर्ण मानसिकता और कठोर सोच का प्रदर्शन करते हैं। विकासवादी मनोवैज्ञानिकों ने सुझाव दिया है कि अनुभूति और व्यवहार के ये संबद्ध ऐसी सकारात्मक और नकारात्मक भावनाओं के महत्व को समझाने में मदद करते हैं। आधुनिक अर्थव्यवस्था में, सृजन के ऐसे पैटर्न को पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है, और इस प्रकार यह सुनिश्चित किया गया है कि सफल कर्मचारी खुश है और इसलिए वे ज्यादा आउटपुट प्रदान करते हैं जिससे कर्मचारियों के कार्यों में परिलक्षित होता है कि कर्मचारी खुश हैं। इसके अलावा, खुश लोगों का स्वास्थ्य भी वेहतर होता है।

जीवन संतुष्टि नीति निर्माताओं के लिए भी महत्वपूर्ण हो सकती है क्योंकि जो लोग सामान्य रूप से जीवन से संतुष्ट हैं, उनके जीवन के अन्य विशिष्ट क्षेत्रों से भी संतुष्ट होने की संभावना अधिक होती है (टोंग, 2007)। वोलमैन (1973) का कहना है कि जीवन की संतुष्टि एक वांछित की प्राप्ति और आवश्यक शर्तों की पूर्ति है। ब्राउन (1981) जीवन की संतुष्टि को एक गतिशील प्रक्रिया मानते हैं जो जीवन भर चलती रहती है। पावोट और डायनर (1993) ने कहा कि संतुष्टि एक जरूरत या चाहत की पूर्ति है। जीवन संतुष्टि किसी के जीवन का सचेत, संज्ञानात्मक निर्णय है जिसमें निर्णय के मानदंड व्यक्ति पर निर्भर होते हैं। क्रिब (2000) के अनुसार जीवन संतुष्टि को अस्तित्व की समग्र स्थितियों के आकलन के रूप में संदर्भित किया जाता है, जो किसी की वास्तविक उपलब्धि के लिए किसी की आकांक्षा की तुलना से प्राप्त होता है। रयान और डेसी (2001) ने दो व्यापक परंपराओं में जीवन संतुष्टि के क्षेत्र को बताया हैः एक खुशी से निपटने (सुखद कल्याण यानी व्यक्तिपरक भलाई) और दुसरी से निपटने वाली (यूडेमोनिक कल्याण यानी मनोवैज्ञानिक कल्याण)। सुखमय कल्याण में प्रभाव और जीवन की गुणवत्ता का वैश्विक मूल्यांकन शामिल है, जहां यूडोमोनिक कल्याण जीवन की अस्तित्वगत चुनौतियों (जैसे सार्थक लक्ष्यों का पीछा करना, एक व्यक्ति के रूप में विकसित करने, के साथ गुणवत्ता संबंध स्थापित करना) के साथ कथित और संपन्नता की जांच करता है। इवांस और केली (2002) ने जीवन की संतुष्टि को आत्म–निर्णय के माध्यम से जीवन की खुशी के पूर्वव्यापी मूल्यांकन के रूप में परिभाषित किया। होफर, चासीओटिस, और कैम्पोस (2006) ने बताया है कि निहित उद्देश्यों और आत्म–जिम्मेदारी द्वारा मूल्यों का संरेखण, संस्कृतियों में एक बढ़ी हुई जीवन संतुष्टि से जुड़ा हुआ है। स्टेगर और काशदान (2007) ने जीवन में अर्थ की उपस्थिति, जीवन में अर्थ की खोज और जीवन की संतुष्टि के लिए मध्यम स्थिरता पाई।

सामान्य तौर पर, यह कहा जा सकता है कि जीवन संतुष्टि व्यक्ति के समग्र कल्याण से मेल खाती है। वैचारिक रूप से जीवन संतुष्टि उस डिग्री को संदर्भित करता है जिस तक व्यक्ति अपने जीवन की गुणवत्ता का सकारात्मक मूल्यांकन करते हैं। कभी–कभी जीवन संतुष्टि के साथ परस्पर उपयोग किए जाने वाले संबंधित शब्द खुशी, जीवन की गुणवत्ता, और (व्यक्तिपरक या मनोवैज्ञानिक) कल्याण (जीवन संतुष्टि की तुलना में एक व्यापक शब्द) हैं। जीवन संतुष्टि किसी व्यक्ति के जीवन के बारे में नकारात्मक से सकारात्मक तक के किसी विशेष बिंदु पर भावनाओं और दृष्टिकोण के समग्र मूल्यांकन के रूप में है। यह भलाई के तीन प्रमुख संकेतकों में से एक हैः जीवन संतुष्टि, सकारात्मक प्रभाव और नकारात्मक प्रभाव (डायनर, 1984)।

डायनर एंड सुह (1997) की व्यक्तिपरक कल्याण की अवधारणा को व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है, जो आम तौर पर उनके जीवन के व्यक्तिगत, व्यक्तिपरक अनुभवों का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है–

1. संतुष्टि, जो जीवन की परिस्थितियों या समग्र रूप से जीवन के अधिक संज्ञानात्मक–संचालित मूल्यांकन को संदर्भित करता है।
2. सुखद भावनाएं, जो सकारात्मक मनोदशाओं और भावनाओं को संदर्भित करती हैं, जैसे खुशी।
3. अप्रिय भावनाएं, जो नकारात्मक मूड और तनाव या चिंता जैसी भावनाओं को संदर्भित करती हैं।

जीवन संतुष्टि, व्यक्तिपरक कल्याण, खुशी और जीवन की गुणवत्ता सभी समान हैं, या यदि वे विभिन्न आयामों को पकड़ते हैं, तो वे विश्लेषणात्मक रूप से महत्वपूर्ण हैं, परन्तु इस पर शोधकर्ताओं के बीच अलग–अलग राय है।

जीवन संतुष्टि में किसी की सामान्य स्थिति का संज्ञानात्मक मूल्यांकन शामिल है। बुनियादी और सार्वभौमिक मानवीय जरूरतें हैं और लोग खुश होंगे अगर

किसी की परिस्थितियाँ किसी व्यक्ति को उन जरूरतों को पूरा करने की अनुमति देती हैं। तीन महत्वपूर्ण सिद्धांतों को नीचे समझाया गया है:

1. मास्लो की आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत
2. सापेक्ष अभाव सिद्धांत
3. अस्तित्व संबंधी वृद्धि (ईआरजी) सिद्धांत

मास्लो की जरूरतों का पदानुक्रम मनोविज्ञान में एक सिद्धांत है जिसे अब्राहम मास्लो ने अपने 1954 के पेपर ''ए थ्योरी ऑफ ह्यूमन मोटिवेशन'' में उल्लेख किया था। मास्लो की जरूरतों के पदानुक्रम को एक पिरामिड के आकार में चित्रित किया गया है जिसमें सबसे बड़े, सबसे बुनियादी स्तर की जरूरतें सबसे नीचे हैं और शीर्ष पर आत्म संतुष्टि की आवश्यकता है। मास्लो के सिद्धांत से पता चलता है कि सबसे पहले बुनियादी स्तर की जरूरतों को पूरा किया जाना चाहिए उसके बाद ही माध्यमिक या उच्च स्तर की जरूरतों पर दृणतापूर्वक ध्यान केंद्रित किया जा सकता है।

शारीरिक आवश्यकताएँ मानव अस्तित्व के लिए शारीरिक आवश्यकताएँ आवश्यक हैं। यदि इन आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जाता है, तो मानव शरीर ठीक से काम नहीं कर सकता है और अंततः विफल हो जाएगा। शारीरिक जरूरतों को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है और उन्हें पहले पूरा करना चाहिए। हवा, पानी और भोजन मानव सहित सभी जानवरों के जीवित रहने के लिए प्रमुख शारीरिक आवश्यकताएं हैं। वस्त्र और आश्रय तत्वों से आवश्यक सुरक्षा प्रदान करते हैं। यौन प्रतिस्पर्धा भी उक्त वृत्ति को आकार दे सकती है।

सुरक्षा की जरूरतें उनकी शारीरिक जरूरतों को अपेक्षाकृत संतुष्ट करने के साथ, व्यक्ति की सुरक्षा जरूरतों को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकी यह मानव व्यवहार पर हावी हो जाती हैं। शारीरिक सुरक्षा के अभाव में, युद्ध, प्राकृतिक आपदा, पारिवारिक हिंसा, बचपन में दुर्व्यवहार आदि के कारण, लोग अभिघातजन्य तनाव विकार या ट्रांसजेनरेशनल आघात का अनुभव कर सकते हैं। आर्थिक सुरक्षा, आर्थिक संकट और काम के अवसरों की कमी के कारण होती हैं। सुरक्षा और सुरक्षा आवश्यकताओं में निम्नलिखित शामिल हैं–

- व्यक्तिगत सुरक्षा
- वित्तीय सुरक्षा
- स्वास्थ्य सुरक्षा
- दुर्घटनाओं, बीमारी और उनके प्रतिकूल प्रभावों के खिलाफ सुरक्षा प्यार और अपनापन शारीरिक और सुरक्षा की जरूरतों को पूरा करने के बाद, मानवीय जरूरतों का तीसरा स्तर पारस्परिक प्रेम है और इसमें अपनेपन की भावना शामिल है। यह आवश्यकता बचपन में विशेष रूप से प्रबल होती है।
- मित्रता
- आत्मीयता
- परिवार

मास्लो के अनुसार, मनुष्यों को अपने सामाजिक समूहों के बीच अपनेपन और स्वीकृति की भावना महसूस करने की आवश्यकता है, भले ही ये समूह बड़े हों या छोटे। उदाहरण के लिए, कुछ बड़े सामाजिक समूहों में क्लब, सहकर्मी, धार्मिक समूह, पेशेवर संगठन, खेल दल और गिरोह शामिल हो सकते हैं। छोटे सामाजिक संबंधों के कुछ उदाहरणों में परिवार के सदस्य, अंतरंग साथी, संरक्षक, सहकर्मी और विश्वासपात्र शामिल हैं। इंसानों को प्यार करने और प्यार पाने की जरूरत होती है – दोनों यौन और गैर यौन रूप से। इस प्यार या संबंधित तत्व के अभाव में बहुत से लोग अकेलेपन, सामाजिक चिंता और नैदानिक अवसाद के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। अपनेपन की यह आवश्यकता साथियों के दबाव की ताकत के आधार पर शारीरिक और सुरक्षा जरूरतों को दूर कर सकती है।

एक अच्छा शिक्षक शिक्षण संस्थानों में किए जाने वाले सभी शैक्षिक कार्यक्रमों की रीढ़ होता है। एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो प्रतिबद्ध, समर्पित, कुशल और संतुष्ट होता है। इसलिए यदि शिक्षकों के पेशेवर मूल्य हैं और वे अपने शिक्षण और जीवन से संतुष्ट हैं, तो वे शिक्षा के मानकों को ऊपर उठाने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। शिक्षक को शिक्षा का आधारशिला होने के नाते अपने काम से संतुष्ट होना चाहिए ताकि वह अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार शिक्षा दे सके। इसलिए, यह देखना आवश्यक है कि शिक्षक अपने से संतुष्ट हों, ताकि वे सर्वश्रेष्ठ नागरिक पैदा कर सकें जो भविष्य के समाज की रीढ़ बन सकें।

लविंगिया (1979) एक शिक्षक जो अपने काम से खुश है और अपने जीवन में संतुष्टि पाता है, समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।.....केवल एक मिलनसार, उत्साही, सुरक्षित और अच्छी तरह से समायोजित शिक्षक ही अपने विद्यार्थियों की भलाई में योगदान दे सकता है।

वर्मा और सूरी (1981), शिक्षक के जीवन में निराशा नहीं होनी चाहिए क्योंकि यह सीधे छात्रों और स्वयं शिक्षक को प्रभावित कर सकता है। एक असंतुष्ट शिक्षक चिड़चिड़ा, उदास, शत्रुतापूर्ण, थका हुआ और विक्षिप्त हो सकता है। वह तनाव पैदा कर सकता है जो छात्रों की सीखने की प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है जिसके परिणामस्वरूप उनका शैक्षणिक विकास प्रभावित हो सकता है। ऐसा शिक्षक देश के लिए खतरे का सबब भी बन सकता है।

ट्रॉटलर (1985) जीवन के हर क्षेत्र में सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण है संतुष्टि। जहां जीवन में असंतोष है वहां कोई सुधार या बेहतरी संभव नहीं है। जो व्यक्ति जीवन से असंतुष्ट रहता है, उसमें एक प्रकार की निराशा प्रबल होगी और वह एक अच्छा नागरिक नहीं बन सकता। शिक्षकों के संबंध में भी यही सच है। संतुष्ट शिक्षक खुद को विषय वस्तु के साथ चिंतित करते हैं, बच्चों को सीखने में मदद करते हैं, उनके जीवन को प्रभावित करते हैं, चरित्र विकास करते हैं और छात्रों के बढ़ने और हासिल करने पर व्यक्तिगत संतुष्टि प्राप्त करते हैं।

क्रैमर (1995) कई कारक कक्षा निर्देशों को प्रभावित करते हैं। एक शिक्षक के व्यवहार के पैटर्न को सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक माना जाता है। किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता शिक्षक के प्रदर्शन पर निर्भर करती है। एक शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है और सकारात्मक उन्मुख शिक्षक के बिना शिक्षा प्रणाली चरमरा जाएगी।

तेजी से विकसित हो रहे तकनीकी विकास ने मोबाइल फोन और टीवी की प्रकृति को प्रभावित किया है, क्योंकि टीवी अब कार्यक्रमों के पुश शेड्यूल का एक सेट नहीं है, इसके बजाय, दर्शक अपने विवेक से चौनलों का चयन करते हैं। मोबाइल फोन एक साधारण तकनीकी वस्तु से काम कर रहे मीडिया उपकरणों के 'स्विस आर्मी नाइफ' में स्थानांतरित हो गया है, जो विशिष्ट फोन–आधारित क्षमताओं के लिए विभिन्न तकनीकी कार्यों की आपूर्ति करता है, जिसमें इंटरनेट एक्सेस, एमपी 3 प्लेयर, एसएमएस, कैमरा, वीडियो से लेकर ईमेल तक शामिल हैं।

अलेक्जेंडर और ब्लाइट (1996) ने पाया कि सूचना प्रौद्योगिकी और दूरसंचार के संयोजन का मतलब है कि विश्व की घटनाएं अब स्थानीयकृत नहीं हैं, बल्कि प्रौद्योगिकियों के माध्यम से दुनिया भर में फैल गई हैं .... एलन और प्रेस्नल (2000) ने जोर देकर कहा कि शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि यह शिक्षा तक पहुंच में सुधार कर सकता है। यह लागत को कम करता है, दक्षता बढ़ाता है, गुणवत्ता में सुधार करता है, ''मांग पर'' या ''समय पर'' सीखने की सुविधा प्रदान करता है, और एक शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण की अनुमति देता है। यदि सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है। गार्नर (2002) ने पाया कि छात्र एसएमएस को व्याख्यान, कार्यक्रम आदि के बारे में जानकारी फैलाने के लिए एक उचित उपकरण के रूप में मानते हैं। सैक्स (2003) ने कहा कि नेटवर्किंग एक जीवंत और सफल अर्थव्यवस्था के निर्माण में सक्षम प्रशिक्षित, शिक्षित और स्वस्थ कार्यबल बनाने में मदद कर सकती है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं तो वे शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं में आईसीटी को अपनाने और एकीकरण के बारे में आसानी से उपयोगी अंतदृष्टि प्रदान कर सकते हैं। तकनीकी स्तर पर, शिक्षण में आईसीटी को सफलतापूर्वक अपनाने और एकीकरण के लिए, शिक्षकों को प्रौद्योगिकी को बेहतर समझना चाहिए।

किसी भी व्यक्ति की संतुष्टि चाहे वह पुरुष हो या महिला। जीवन संतुष्टि महिलाओं के सशक्तिकरण का सूचक है। सशक्त महिलाएं समाज की अंतर्निहित ताकत होती हैं। ऐसा माना जाता है कि एक सशक्त महिला अपने जीवन में संतुष्ट रहती है।

सन्दर्भ सूची:

1. Women's Work, Elizabeth W Barber, W. W. Norton & Company, 1996.
2. Women in Indian Society, Dr Anju Beniwal, Partridge Publishing, 2014.
3. Women in Early Indian Societies, B D Chattopadhyaya, Manohar Publishers, 2011.
4. Women In Indian Sciety, Neera Desai, National Book Trust, 2001.
5. Women and Society in Early Medieval India, Verma, Taylor & Francis.
6. Women and Indian Society: Options and Constraints, Andal, Rawat Publication, 2002.
7. Google search Many Sites.